कृषि कुंभ
हिंदी मासिक पत्रिका

खण्ड 03 भाग 07, (दिसंबर, 2023)
पृष्ठ संख्या 53–54

कई रोगों की रामबाण दवा है: करंज

डॉ. रूद्र प्रताप सिंह[1] एवं डॉ. रोहित कुमार[2]
प्रोफेसर[1], एवं सहायक प्राध्यापक[2]
फैकल्टी ऑफ एग्रीकल्चर,
भंगवत विश्वविधालय, अजमेर, राजस्थान, भारत।

Email Id: rudra.agento@gmail.com

करंज एक बहुउद्देशीय सदाबहार वृक्ष है। करंज का वानस्पतिक नाम पोंगैमिया पिन्नाटा है। यह पौधा फैबेसी कुल का है। करंज एक बहुवर्षीय, बड़े आकार एवं सूखा सहन करने वाला वृक्ष है। यह लगभग 5–12 मीटर लंबा तथा धीमी गति से बढ़ने की प्रकृति वाला वृक्ष है। करंज एक ऐसा पौधा है जिससे प्राप्त होने वाले तेल को बायो–डीजल के रूप में उपयोग में लाने की प्रबल व अपार सम्भावनाएं दिखती हैं। परिपक्व बीज (1 ग्राम) में लगभग 5 प्रतिशत छिलका तथा 95 प्रतिशत तेलयुक्त गिरी रहती है। वायुशुष्क गिरियों में आर्द्रता 19 प्रतिशत, वसा 27.5 प्रतिशत, प्रोटीन 17.4 प्रतिशत, स्टार्च 6.6 प्रतिशत, कच्चा रेशा 7.3 प्रतिशत तथा राख 2.4 प्रतिशत पाया जाता है।

जबकि बीजों में म्यूसिलेज (13.5 प्रतिशत) वाष्पशील तेल की अल्प मात्रा तथा ग्लेब्रिन नामक जटिल ऐमीनो अम्ल रहते हैं। इसकी खली का उपयोग जैविक खाद के रूप में किया जाता है। इसके अलावा यह कम उर्वरता, कम वर्षा वाली व पथरीली मिट्टियों में भी उगने की क्षमता रखता है। जंगली जानवर इसको अधिक हानि नहीं पहुँचा पाते हैं।

करंज की खेती:

इसकी खेती सभी प्रकार की भूमियों पर आसानी से की जा सकती है, जो कम से कम दो फीट गहरी हो। इसे शुष्क एवं अर्धशुष्क क्षेत्रों में भी उगाया जा सकता है। जिन क्षेत्रों में औसतन वार्षिक वर्षा कम से कम 600–700 मि.मी. होती है। वहाँ इसकी खेती अच्छी तरह की जा सकती है। वैसे इसे 500 से 2500 मि.मी. औसतन वार्षिक वर्षा तथा तापमान 10 डिग्री सेल्सियस से 45 डिग्री सेल्सियस तक सफलतापूर्वक उगाया जा सकता है। करंज प्रवर्धन मुख्यतः बीजों द्वारा होता है। इसके अलावा करंज का प्रवर्धन वानस्पतिक विधि द्वारा भी किया जाता है।

करंज के बीजों को बोने से पहले इसे 50 डिग्री सेल्सियस तापमान वाले जल में 15 मिनट तक भिगोने से अंकुरण शीघ्र व अधिक होता है। पॉलीथीन की थैलियों में मिट्टी, कम्पोस्ट खाद तथा बालू की मात्रा उपयुक्त अनुपात (2:1:1) में सुनिश्चित कर लें। बीज को इन तैयार थैलियों में डेढ़ से दो सेंटीमीटर गहराई पर बो देना चाहिए। रोपाई सामान्यतः एक वर्ष पुराने पौधों की करनी चाहिए।

तैयार गड्ढ़ों में भी 2 से 3 बीज प्रति गड्ढ़े की दर से जुलाई के महीने में सीधी बुआई भी की जा सकती है। लगभग 10 दिन बाद अंकुरण शुरू हो जाता है।

करंज आमतौर पर विश्व के कटिबंधीय, उष्ण कटिबंधीय क्षेत्रों तथा 1200 मीटर तक की ऊँचाई वाले स्थानों में पाया जाता है। भारत में यह मुख्यतः आंध्र प्रदेश, राजस्थान, हरियाणा, दिल्ली, तमिलनाडू, कर्नाटक, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश इत्यादि राज्यों में पाया जाता है।

करंज प्रवर्धन की वानस्पतिक विधिः

करंज प्रवर्धन के लिये 15–20 सेंटीमीटर लम्बी तथा 2–3 सेंटीमीटर मोटी कलमों को जुलाई–अगस्त माहों में पॉलीथीन में लगाने चाहिए। थैलियों में लगे पौधे जब लगभग 60 सेंटीमीटर के हो जायें तब असिंचित क्षेत्रों में 5 × 5 मी. और सिंचित क्षेत्रों के लिये 6 × 6 मी. की दूरी पर गडढ़े खोद लिये जाते हैं, गड्ढ़ों का आकार 45 × 45 × 45 सेंटीमीटर का होता है। इन गड्ढ़ों में उचित मात्रा में खाद एंव उवर्रकों को मिलाकर भरने के बाद मानसून आने के बाद अथवा जुलाई–अगस्त के महीनों में पौध रोपण कर दिया जाता है। रोपण के लिये स्वस्थ पौध का चयन करना चाहिये।

खाद एवं उर्वरक :

करंज की अच्छी बढ़वार हेतु प्रत्येक गड्ढे में 2–3 किलोग्राम गोबर की सड़ी हुई खाद या वर्मी कम्पोस्ट खाद, 100 ग्राम सिंगल सुपर फास्फेट डाल कर अच्छी तरह मिला दें।

सिंचाई :

करंज एक सूखा सहन करने वाला वृक्ष है। अतः इसे अधिक सिंचाई देने की आवश्यकता नहीं पड़ती है। परंतु रोपण करने की शुरूआती अवस्था में पानी देना बहुत ही आवश्यक होता है। शुष्क मौसम (मार्च से मई) में एक या दो सिंचाई करना उत्तम रहता है।

कीट नियंत्रण :

करंज के वृक्षों को अधिकतर हानि गाल इन्डयूसर, लीफ, माइनर, पत्ती खाने वाले, तना छेदक तथा बीज छेदक कीटों द्वारा होती है। इसके बचाव के लिये 1. 5 मिलीमीटर मेटासिस्टॉक्स या डायमेथोएट 2 मिलीमीटर प्रति 3 लीटर पानी के घोल का छिड़काव करना उपयुक्त होता है।

कटाई–छँटाई :

अधिक बीज उत्पादन के लिये अधिक शाखाओं को विकसित करने की आवश्यकता होती है। अतः इन शाखाओं को विकसित करने के लिये हमें समय–समय पर कटाई–छँटाई करनी पड़ती है।

करंज का पुष्पन, फलन एवं कटान

सामान्य तौर पर करंज का वृक्ष चौथे वर्ष फूलना व फलना शुरू कर देता है। अप्रैल से जुलाई माह में पुष्प आने शुरू हो जाते हैं। फल अगले वर्ष मार्च से मई माह में पककर तैयार हो जाते हैं। इसकी हरी फलियां लगभग 10–11 सप्ताह में हल्के भूरे रंग में परिवर्तित हो जाती हैं। इसलिये इसके फल में वर्ष भर प्राप्त होते रहते हैं।

बीज संग्रहण एवं प्रसंस्करण

करंज की पकी हुई फलियों को अप्रैल से जून माह में वृक्ष से ही तोड़कर धूप में सुखा लेते हैं। फलियां 4 से 5 सेंटीमीटर लंबी 1.5 से 2.5 सेंटीमीटर चौड़ी व भूरे पीले रंग की होती है। जिनमें एक या दो बीज पाये जाते हैं। बीज निकालने के लिये या तो फलियां हल्के से कूटी जाती हैं या उनके जोड़ को चाकू से खोल दिया जाता है। करंज में बीज उत्पादन लगभग 30 से 50 किलोग्राम प्रति वृक्ष प्रतिवर्ष होता है। जब फलियों का ऊपरी भाग हल्का भूरा होने लगे, तब इन्हें तोड़ा जा सकता है। बीजों का भण्डारण करने की अपेक्षा फलियों को पॉलिथीन की थैलियों में भण्डारण करना लाभप्रद रहता है। बीजों में तेल की मात्रा औसतन 27–39 प्रतिशत होती है।

करंज की औषधीय महत्वः

बीजों का उपयोग अनेक उद्योगों और औषधियों में होता है। चूर्णित बीजों का महत्त्व ज्वर शामक तथा टॉनिक के रूप में है जिसका प्रयोग श्वासनली रोग तथा कुकर खांसी की चिकित्सा में होता है। फलियों के छिलके का चूर्ण भी इसी काम आता है। पिसे हुए बीजों से बने पेस्ट का प्रयोग कोढ़, त्वचा संबंधी रोगों, दुखने वाले आमवाती जोड़ों के इलाज में होता है। बीजों का मछलियों के लिये विष के रूप में भी प्रयोग होता है। करंज से प्राप्त बीजों से तेल निकाला जाता है। जिसमें 27 से 39 प्रतिशत तक तेल प्राप्त होता है।